Run by: *New Akanksha Shiksha Samiti*

Dr. RADHAKRISHNAN COLLEGE OF EDUCATION

(Recognised by N.C.T.E., Sate Govt. & Affiliated to R.D.V.V. Jabalpur)

Patan Road Near NEW RTO Karmeta, Jabalpur (M.P.)-482002

Phone: 0761-2682004, Website: www.radhakrishnanedu.com

Email: rkce@yahoo.com / choubey_abhi27@yahoo.in

DVV 3.2.1

Average number of research papers / articles per teacher published in Journals notified on UGC website during the last five years

3.2.1.1. **Number of research papers / articles per teacher published in theJournals notified on UGC website during the last five years**

DVV Query

- First page of the article/journals with seal and signature of the Principal
- E-copies of outer jacket/contents page of the journals in which articles are published

Institution Response

Institute attached the First page of the article/journals with seal and signature of the Principal

PRINCIPAL
Dr. Radhakrishnan College of Education Karmeta, Jabalpur

IJESRR

E-ISSN 2348-6457
P-ISSN 2349-1817
editor@ijesrr.org

02/19

शिक्षण में सक्रिय अधिगम प्रविधि (एएलएम) का अध्ययन

समता वर्मा
शोधार्थी

डॉ. बी.आर. बरोदे
शोध निर्देषक

सार

प्रस्तुत शोध पत्र में कक्षा शिक्षण को प्रभावशाली बनाने में सक्रिय अधिगम विधि कि प्रभावशीलता पर शोध किया गया है। अध्यापन में पाया गया कि सक्रिय अधिगम प्रविधि एवं परंपरागत विधि की तुलना में अधिक प्रविधियों का प्रयोग किया गया तथा सक्रिय अधिगम विधि परंपरागत विधि कि तुलना में अधिक प्रभावी रही है। जब वे पाठ्यक्रम सामग्री के साथ जुड़ते हैं और सक्रिय रूप से अपने सीखने में भाग लेते हैं। फिर भी पारंपरिक शिक्षण मॉडल ने छात्रों को निष्क्रिय रिसेप्टर्स के रूप में स्थान दिया है जिसमें शिक्षक अवधारणाओं और सूचनाओं को जमा करते हैं। मॉडल ने पाठ्यक्रम सामग्री के वितरण पर जोर दिया है और मूल्यांकन में पाठ्यक्रम सामग्री को प्रतिबिंबित करने में निपुण छात्रों को पुरस्कृत किया है।

मुख्य शब्द: शिक्षण, शिक्षक, सक्रिय अधिगम प्रविधि.

परिचय

सक्रिय शिक्षण पद्धति भी गतिविधि आधारित शिक्षण का एक रूप है। यह सभी शिक्षार्थियों को सीखने में भाग लेने के लिए बनाता है। इस पद्धति में छात्र पढ़ने, लिखने, बोलने, चित्र बनाने, साझा करने, कौशल को व्यक्त करने और व्यक्तिगत रूप से और समूहों में प्रश्न करने में शामिल होते हैं। सक्रिय सीखने में छात्रों को चीजों को करने और वे जो कर रहे हैं उसके बारे में सोचने में शामिल होते हैं। बोनवेल और ईसन के अनुसार छात्रों को सिर्फ सुनने से ज्यादा कुछ करना चाहिए। उन्हें पढ़ना, लिखना, चर्चा करना और समस्याओं को हल करना चाहिए। उन्हें उच्च–क्रम के सोच कार्यों में संलग्न होना चाहिए। कार्य विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन हैं। छात्रों को पारंपरिक व्याख्यान पद्धति की तुलना में सक्रिय सीखने को बढ़ावा देने वाली रणनीतियाँ पसंद हैं। सक्रिय सीखने में, छात्र कुछ ऐसा कर रहे हैं जिसमें जानकारी की खोज, प्रसंस्करण और आवेदन करना शामिल है। सीखने की प्रक्रिया में छात्रों को सक्रिय रूप से शामिल करने के लिए कई शिक्षण रणनीतियों को नियोजित किया जा सकता है। एएलएम में गतिविधियां महत्वपूर्ण सोच में कौशल में सुधार करती हैं, प्रेरणा और प्रतिधारण और पारस्परिक कौशल में वृद्धि करती हैं। सक्रिय शिक्षण में छात्र सीधे और सक्रिय रूप से सीखने की प्रक्रिया में शामिल होते हैं। केवल मौखिक और दृश्य रूप से जानकारी प्राप्त करने के बजाय, छात्र प्राप्त कर रहे हैं और भाग ले रहे हैं और कर रहे हैं। सक्रिय सीखने के तरीकों की आवश्यकता है कि छात्र को सार्थक बात करने, सुनने, लिखने और पढ़ने के अवसर खोजने चाहिए।

सक्रिय अधिगम प्रविधि

सामाजिक परिवर्तन में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता का अध्ययन(किशोर विद्यार्थियों के विशेष संदर्भ में)

धनंजय मजूमदार,शोधार्थी, (शिक्षाशास्त्र)
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय,जयपुर,राजस्थान

प्रस्तावना

पांच वर्ष की आयु तक के एक बच्चे को, अमोरल माना जाना चाहिए, उस समय तक, उसे नैतिकता की कोई अवधारणा नहीं है। अंतरात्मा क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं की एक लंबी श्रृंखला का परिणाम है जो किसी के स्वयं के अनुभवों की प्रतिक्रिया है। किशोरावस्था के दौरान, सुपरएगो या विवेक एक प्रभावी सेंसर के रूप में काम करना शुरू कर देता है।

किशोर सोचने लगता है कि कुछ व्यवहार नैतिक रूप से उचित है या नहीं। लेकिन इस संबंध में परिपक्वता की कमी के कारण, कई बार, वह या वह भ्रमित हो जाता है, और यह तय करने में विफल रहता है कि एक निश्चित चीज की जानी चाहिए या नहीं। मार्गदर्शन के लिए, ऐसे कठिन अवसरों के दौरान, किशोरों को संदर्भ के लिए अच्छी मात्रा में प्रदर्शनों की सूची की आवश्यकता होती है।

नैतिक शब्द लैटिन शब्द से बना है जिसका अर्थ है शिष्टाचार, रीति–रिवाज और लोक तरीके। नैतिकता सामाजिक व्यवस्था के साथ अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई है। बच्चे को सीखना है कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है, क्या सही है और क्या गलत है। उसे अपना कर्तव्य भी सीखना होगा।

नैतिक विकास के आयाम –

नैतिक विकास वह प्रक्रिया है जिसमें बच्चा अपने समुदाय द्वारा दिए गए मूल्यों को प्राप्त करता है। इन मूल्यों के संदर्भ में सही और गलत की भावना प्राप्त करता है३। अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं और मजबूरियों को नियंत्रित करने के लिए सीखता है ताकि, जब एक स्थितिजन्य संघर्ष (उठता है, तो वह वही करता है जो उसे करना चाहिए बजाय इसके कि उसे क्या करना है)। नैतिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक समुदाय परिपक्व वयस्क के सामाजिक व्यवहार में शिशु की अहंता को स्थानांतरित करना चाहता है।

सामाजिक सरोकार और महिला सशक्तिकरण

सचिन कुमार पेन्डके,शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र)

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय,जयपुर,राजस्थान

अध्ययन परिचय

सृष्टि के प्रारम्भ में मानव का जीवन कैसा था? स्त्री–पुरूष के सम्बन्ध उनकी भूमिकाएं क्या थीं? जिससे स्पष्ट हुआ कि प्राचीन काल से अब तक इतिहास के भिन्न–भिन्न कालखण्डों में महिलाओं की दशा भी बदलती रही है। महिला सशक्तिकरण के इस मॉडयूल में आइये! मानव के उद्‌भव एवं विकास के ऐतिहासिक क्रम में हम गहराई से महिलाओं की स्थिति को जानने का प्रयत्न करते हैं। महिलाओं को केन्द्र में रखकर इतिहास को निम्नांकित कालखण्डों में बांटा जा सकता है –

आदिकाल : आदिमानवों का समाज झुण्ड में रहता था। इस झुण्ड में कुछ स्त्री पुरुष तथा बच्चे होते थे। वे फल–फूल तथा शिकार कर अपना जीवन व्यतीत करते थे। बारिश तथा धूप से बचने के लिए गुफाओं में रहते थे। स्त्री–पुरूष संबंध स्वच्छंद थे। धीरे–धीरे इस व्यवस्था ने उस समय की जरूरत के हिसाब से आकार ग्रहण करना शुरु कर दिया। गर्भवती तथा प्रसूता स्त्रियाँ शिकार तथा भोजन एकत्र करने की अन्य गतिविधियों में पहले की तरह हिस्सा नहीं ले पाती थीं। शिशु के प्रति एक स्वाभाविक लगाव, उसकी देख–रेख आदि समस्या के समाधान स्वरूप स्त्रियाँ घर पर रहने लगीं। गृह प्रबंधन पूरी तरह स्त्रियों के हाथ में था। पुरुष सैनिक की भांति अपने घर की रक्षा करते थे। आदिमाता, सप्तमातृका, वनदेवी, प्रकृतिदेवी आदि की अवधारणा प्रारंभिक मातृ सत्तात्मक व्यवस्था की ही देन है। इस सामाजिक व्यवस्था ने स्त्री–पुरूष दोनों के लिए जीवन पहले से अधिक सरल बना दिया। पुरुष शिकार के लिए नए–नए हथियार गढने में रुचि लेने लगा जबकि स्त्रियाँ गृह प्रबंधन को सुचारू रूप से चलाने में व्यस्त हो गईं। परंतु यह सुखद स्थिति लम्बे समय तक नहीं टिक सकी। सभ्य होते–होते मनुष्य में महत्वाकांक्षा के साथ–साथ प्रतिस्पर्धा की भावना भी बढ़ने लगी। इस नियम के पश्चात स्त्रियों की दुनिया चारदीवारी में कैद होती चली गई। सामाजिक गतिविधियों में उनकी भूमिका नगण्य हो गई। उपार्जन के साधनों पर पूरी

04/22

International Journal of Arts & Education Research

उच्च प्राथमिक स्तर पर (एएलएम) के कार्यान्वयन में शिक्षकों के प्रति दृष्टिकोण

डॉ. बी.आर. बरोदे
शोध निर्देषक

समता वर्मा
शोधार्थी

सार

वर्तमान अध्ययन जबलपुर जिले के उच्च प्राथमिक स्तर के स्कूलों में एएलएम के कार्यान्वयन में शिक्षकों के प्रति दृष्टिकोण और समस्याओं की जांच करता है। सांख्यिकीय विश्लेषण के परिणाम एएलएम के कार्यान्वयन के प्रति दृष्टिकोण और एएलएम के कार्यान्वयन में शिक्षकों के सामने आने वाली समस्याओं के बीच एक महत्वपूर्ण नकारात्मक सहसंबंध दिखाते हैं। उच्च प्राथमिक स्तर पर सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच दृष्टिकोण और एएलएम के कार्यान्वयन में आने वाली समस्याओं के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं देखा गया है। अतः यह कहा जा सकता है कि अवधारणाओं की समझ बनाने के लिए ALM एक आवश्यक अधिगम प्रक्रिया है। कि प्रचलित कक्षा गत प्रक्रिया को अधिक सहज एवं बाल केन्द्रित बनाने, प्रत्येक बच्चे को अपनी स्वाभाविक गति से सीखने एवं व्यक्त करने के अवसर देने तथा शाला में बच्चे के प्रत्येक दिन को उपयोगी, मनोरंजक एवं सार्थक बनाने हेतु ALM आवश्यक है।

मुख्य शब्द : एएलएम , अधिगम, *

प्रस्तावना

जिस तरह से इतिहास के माध्यम से ज्ञान को व्यवस्थित किया गया है, उसी तरह से लेनदेन के विषयों के आसपास स्कूल की संरचना की जाती है। औद्योगिक क्रांति ने कई चीजों को संभव बनाया। इसने बड़े पैमाने पर स्कूली शिक्षा भी लाई जो उस समय के प्रमुख दृष्टिकोण के आसपास बनाई गई थी कि छात्र खाली बर्तन की तरह होते हैं और ज्ञान को उनमें डालना पड़ता है। प्रारंभिक शिक्षा स्कूली शिक्षा की सीढ़ी का पहला चरण है, जो बाकी स्कूली शिक्षा और सभी उच्च शिक्षा की नींव रखता है। इसलिए हमारी शिक्षा प्रणाली को छात्रों में आवश्यक कौशल और ज्ञान का आधार बनाना चाहिए जो इन आवश्यक कौशलों का उपयोग करके संज्ञानात्मक विकास और विकास को सक्षम बनाए। ये बुनियादी कौशल हैं पढ़ना, लिखना, सुनना, संचार, गणितीय कौशल और अवलोकन कौशल (NCF–2005)। शिक्षा में उच्च गुणवत्ता का एक प्रमुख पहलू विभिन्न शैक्षणिक कौशल और ज्ञान में उच्च शिक्षण परिणामों की प्राप्ति है और जब ऐसी शिक्षा विकलांग छात्रों को उनकी सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बावजूद विकलांग छात्रों के रूप में शामिल करने में सक्षम है। समझ के लिए शिक्षण शैक्षिक अभ्यास में एक एजेंडा है जो 1980 के

IJAER/March-April-2022/Volume-11/Issue-2 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के अध्यापकों के व्यावसायिक दबाब का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन

डॉ. बी. आर. बरोदे
निर्देशक

श्रीमति सुधा पासी
शोधार्थी

शोध सार

प्रस्तुत शोध का मुख्य उददेश्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के महिला एवं पुरूष अध्यापकों के व्यावसायिक दबाव का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है । अध्ययन हेतु जबलपुर के शहर के उच्च माध्यमिक स्तर के अशासकीय विद्यालयों के पुरूष एवं महिला अध्यापको का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया हैं। आंकडो के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। अनुसंधान उपकरण के रूप में व्यावसायिक दबाव मापनी – डॉ.प्रतिभा शर्मा एवं मानसिक स्वास्थ्य मापनी – डॉ. श्रीमति कमलेश शर्मा मापनी का प्रयोग किया गया हैं। सांख्यिकीय गणना के रूप में मध्यमान, मानक विचलन, टी परीक्षण द्वारा विश्लेषण किया गया एवं निष्कर्ष के रूप यह पाया गया कि महिला एवं पुरूष अध्यापकों का व्यावसायिक दबाव का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पडता है।

प्रस्तावना :–

इतिहास के पन्ने पलटने पर हमें ज्ञात होता है कि शिक्षण एक आदर्श व्यवसाय के रूप में रहा है। यह न केवल एक व्यवसाय है, अपितु यह सभी व्यवसायो की जननी है। अध्यापक वह धुरी है। जिस पर शैक्षिक पद्धति कार्यरत है। इसलिए भारतीय समाज में सर्वोच्च व श्रेष्ठतम स्थान शिक्षक को दिया गया है। उसे राष्ट्र का निमार्ता, उन्नायक एंव मानवता का कर्ता, प्रथ प्रदर्शक भी कहा गया है। क्योकि जो एक छात्र के मानस पटल पर लगे हुए ताले को खोलता ही नहीं हैं वरन उसे एक नई दिशा प्रदान भी करता है।

शिक्षा के सभी घटको में अध्यापक ही अधिक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मानी जाती हैं। वह बालक को ऐसी शिक्षा, ऐसी दृष्टि व ऐसी सकारात्मक सोच प्रदान करता हैं जो आगे चलकर एक अच्छा नागरिक, शिक्षक, डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक और वकील बनकर समाज में अपनी भूमिका का निर्वाहन करने योग्य बनाता हैं। व्यवसाय के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना एवं सम्पूर्ण उर्जा को व्यवसाय में समर्पित कर देने की तत्परता ही व्यावसायिक प्रतिबध्दता कहलाती है। एक प्रतिबध्द शिक्षक अवश्य ही जीविकागत नैतिकता और कर्तव्य का पालन करता है, चाहे उसे सामाजिक प्रतिफल मिले या न मिले। इसलिये शिक्षण कार्य को सभी व्यवसायो में श्रेष्ठ माना जाता हैं।

शिक्षण व्यवसाय एक ऐसा व्यवसाय हैं जिसमें नैतिकता ,ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, सहानुभूति, दया, सामाजिकता, कमर्ठता, मानवीयता आदि गुणो की आवश्यकता होती हैं। प्रत्येक व्यवसाय की नींव शिक्षण पर आधारित हैं। सभी व्यवसायो का आधार शिक्षण हैं। अध्यापन एक महत्वपूर्ण कार्य। शिक्षक ज्ञान का सागर हैं जो विद्यार्थियो के विभिन्न पहलुंओ को तराशता हैं शिक्षा व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान करती हैं, निर्माणकारी नागरिकता हेतु तैयार करती है और इस प्रकार देश के वैज्ञानिक और आर्थिक आधारो को शक्ति प्रदान करती है। सभ्य और विकसित समाज और समुदाय के निमार्ण में एक शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षक को अपने जीवन में अनेक कठिनाईयो का निवार्हन

Copyright@ijaer.org

Peer Reviewed Journal for M.Phil., Ph.D. & Appointment of Teacher in Universities & College

ISSN : 2454-4655 VOLUME - 9 No. : 8, Sep. - 2023

International Journal of Social Science & Management Studies

Peer Reviewed & Refereed Journal

Indexing & Impact Factor 5.2

International Journal of Social Science & Management Studies

उच्चतर–माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर कोरोना के प्रभाव का अध्ययन

श्रीमती ज्योति शुक्ला[1], डॉ. (श्रीमती) अनिता महर्जि[2]

कोविड–19 की चुनौतियों और शिक्षा प्रक्रिया के परिवर्तित स्वरुप में भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व 'कोविड–19' महामारी के चलते एक अभूतपूर्व कठिनाई का सामना कर रहा है। वायरस के प्रसार को रोकने के लिए, दक्षिण एशियाई देशों ने कड़े लॉकडाउन लगाए है, जिसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र के लाखों लोगों का जीवन और आजीविका प्रभावित हुई है, जहाँ दुनिया के एक तिहाई गरीब रहते हैं। इस पृष्ठभूमि के खिलाफ पर्यटन, अनौपचारिक क्षेत्र, कृषि और ग्रामीण आजीविका सहित प्रमुख सामाजिक और आर्थिक स्तर पर कोविड–19 के मौजूदा और संभावित प्रभावों, जोखिमों और चुनौतियों की जांच करता है। विश्लेषण से पता चला है कि कोविड–19 से आर्थिक विकास को प्रभावित करने, राजकोषीय घाटे और मौद्रिक बोझ में वृद्धि, प्रवासन और प्रेषण में कमी, यात्रा और पर्यटन से आय कम होने की संभावना है और परिणामस्वरूप सूक्ष्म लघु और मध्यम उद्योग और अनौपचारिक व्यवसाय घटते जा रहे हैं। इससे गरीबी और बढ़ने की संभावना है और बेरोजगारी और भूख और खाद्य असुरक्षा के जोखिम बढ़ेंगे। यदि ठीक से संबोधित नही किया गया तो यह मौजूदा असमानताओं को मजबूत कर सकता है कोविड–19 ने क्षेत्र की बड़ी आबादी और गरीबी की उच्च दर, दयनीय स्वास्थ्य, खराब सामाजिक–आर्थिक स्थितियों, अपर्याप्त सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों को प्रभावित किया है। प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर कोरोना के प्रभाव का अध्ययन करना है। न्यादर्श हेतु जबलपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों से 400 विद्यार्थियों का चयन किया गया। । इन विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मापन हेतु मानकीकृत सामाजिक–आर्थिक स्थिति मापनी एवं कोरोना की प्रभावशीता मापने हेतु स्वनिर्मित प्रशासन किया गया तथा प्रदत्तों के विश्लेषण के उपरांत पाया कि कोरोना का उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

कोविड–19 के दौरान प्राथमिक शिक्षा पूरी तरह ध्वस्त हो चुकी है, न विद्यालय, न कक्षा न पाठ्यपुस्तक न परीक्षा। शिक्षा के नाम पर नाममात्र के अनेक असफल प्रयास अपनाए गए। कोरोना महामारी ने सारी दुनिया भर में एक व्यवधान और अभूतपूर्व नुकसान को पैदा किया है। कोई भी देश विकास से विकसित तक इसकी मार से नही बच पाया है। दिसंबर 2019 में चीन के वुहान शहर से निकाले कोरोना वायरस के एक नए तनाव के कारण हुए कोविड–19 को विश्व संगठन द्वारा महामारी घोषित किया गया। इसकी संक्रामक प्रकृति के कारण बड़ी संख्या में आर्थिक गतिविधियों को रोक दिया है।

[1] शोधार्थी, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय (म.प्र.)
[2] विभागाध्यक्ष, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, जबलपुर

Peer Reviewed Journal for M.Phil., Ph.D. & Appointment of Teacher in Universities & College

ISSN : 2394-3580 VOLUME - 10 No. : 9, July - 2023

Swadeshi Research Foundation

A MONTHLY JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

Indian Tech

GLOBAL CERTIFICATION SERVICES

Research Journal SRF Book Publication

International SRS Scientific Research Solution

Peer Reviewed & Refereed Journal

Indexing & Impact Factor 5.2

Published by :

Swadeshi Research Foundation & Publication

Seva Path, 320 Sanjeevani Nagar,
Veer Sawarkar Ward, Garha, Jabalpur (M.P.) - 482003

Swadeshi Research Foundation A Monthly Journal of Multidisciplinary Research
International Peer Reviewed, Refereed, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex- UGC S.N. 4990
ISSN : 2394-3580, Vol. - 10, No. - 9, July - 2023

2023

उच्चतर–माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों के समायोजन पर कोरोना के प्रभाव का अध्ययन

श्रीमती ज्योति शुक्ला
शोधार्थी, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय (म.प्र.)
डॉ. (श्रीमती) अनिता महर्जि
विभागाध्यक्ष, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, जबलपुर

समायोजन एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक परिवर्त्य है, क्योंकि प्रत्येक जीवित प्राणी के सामने कुछ न कुछ परेशानियों और समस्याएँ होती हैं। एक व्यक्ति कितना प्रभावशाली है, यह उसकी समस्याओं की संख्या से ज्ञात नहीं होता है बल्कि उसकी प्रभावशीलता इस बात से स्पष्ट होती है कि वह इन समस्याओं को तथा जीवन की चुनौतियों को किस प्रकार स्वीकार करता है। समायोजन एक गतिशील प्रक्रिया है, न कि स्थिर यदि व्यक्ति के समायोजन को देखा जाए तो केवल व्यक्ति में ही परिवर्तन नहीं होते हैं परिवर्तन अक्सर पर्यावरण में भी होते रहते हैं। कोविड–19 की चुनौतियों और शिक्षा प्रक्रिया के परिवर्तित स्वरुप में भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व 'कोविड–19' महामारी के चलते एक अभूतपूर्व कठिनाई का सामना कर रहा है। प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों के समायोजन पर कोरोना के प्रभाव का अध्ययन करना था। न्यादर्श हेतु जबलपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों से 200 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का चयन किया गया। इन विद्यार्थियों पर समायोजन मापनी एवं कोरोना की प्रभावशीता मापने हेतु स्वनिर्मित प्रशासन किया गया तथा प्रदत्तों के विश्लेषण के उपरांत निष्कर्ष स्वरूप पाया कि शिक्षकों के समायोजन पर कोरोना का प्रभाव पड़ता है। कोरोना से अधिक प्रभावित शहरी एवं ग्रामीण शिक्षक शिक्षिकाओं एवं कोरोना से कम प्रभावित ग्रामीण शिक्षक–शिक्षिकाओं के समायोजन में सार्थक लिंग भिन्नता नहीं है। जबकि शहरी क्षेत्र के कोरोना से कम प्रभावित शिक्षिकाओं का समायोजन अशिक्षकों की तुलना में अच्छा है।

मानव एक जिज्ञासु प्राणी है। अपनी जिज्ञासा शांत करने हेतु नित नए प्रयोग और प्रयास करता रहता है। आदिकाल से जैसे ही उसने सामाजिक जीवन आरंभ किया धीरे–धीरे प्रकृति से दूरी होने लगी। वह प्राकृतिक नियमों को यदा–कदा अनदेखी करने लगा। परिणाम स्वरूप प्रकृति भी कभी–कभी मानव को अपने होने का अस्तित्व किसी न किसी रुप में दिखाती है। अब मानव प्राकृतिक संसाधनों का लगातार दोहन करने लगा, प्रकृति के नियमों को जान–बूझकर तोड़ने लगा ऐसी स्थिति में कभी–कभी अपने आपको सर्वाधिक शक्तिशाली मानने से भी गौरवान्वित होने लगा है। अब मानव की प्रवृत्ति प्रकृति की प्रवृत्ति से भिन्न होने लगी। प्रकृति जहाँ प्रकृति प्रेमियों पर उपहार स्वरुप अपना सर्वस्व मनुष्य को देती है, और हम इस प्राकृतिक उपहार का उपहास उड़ाने लगते हैं, तो प्रकृति भी मानव को सही रास्ते पर लाने के लिए कभी–कभी अपना रौद्ररुप भी दिखाती है। तब मानव को अपनी स्थिति का आभास होता है।

शिक्षा मानव विकास का साधन है, यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे बालक का सर्वांगीण विकास संभव है। यह आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। विद्यालय शिक्षा प्राप्त करने का एक औपचारिक साधन है, किन्तु शिक्षा कहीं से और कभी भी प्राप्त की जा सकती है। शिक्षा प्राप्त करना हमारा मौलिक अधिकार है। व्यक्तिगत विकास और आधुनिक लोकतान्त्रिक समाज के लिए यह अति आवश्यक है।

शिक्षा वह प्रकाश है, जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। इससे वह समाज का एक उत्तरदायी घटक एवं राष्ट्र का प्रखर चरित्र सम्पन्न नागरिक बनकर समाज की सर्वांगीण उन्नति में अपनी शक्ति का उत्तरोत्तर प्रयोग करने की भावना से ओत–प्रोत होकर संस्कृति एवं सभ्यता पुनर्स्थापित करने के लिए प्रेरित होता जाता है। मानव विकास के महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक महत्वपूर्ण पहलू है, समायोजन। बालक के विकास व समायोजन में विभिन्न कारकों में से शिक्षण का माध्यम पैरेन्ट एवं विद्यालय परिवेश तीनों कारकों का प्रमुख योगदान रहता है ये कारक प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रुप से अपना–अपना प्रभाव बालक के विकास पर डालते रहते हैं।

व्यक्ति अपने विकास में ऐसी परिस्थितियों का सामना करता है, जो उसकी इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति में बाधक होते हैं उदाहरणार्थ–एक छात्र शिक्षा समाप्त करने पर वायु सेना

Swadeshi Research Foundation A Monthly Journal of Multidisciplinary Research
International Peer Reviewed, Refereed, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex- UGC S.N. 4990
ISSN : 2394-3580, Vol. - 10, No. - 7, May - 2023

2023

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के अध्यापकों के शिक्षण के प्रति प्रतिबद्धता का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

सुधा पारी, शोधार्थी
डॉ. भी.आर. बरोदे, निर्देशक
सरदार पटेल विश्वविद्यालय, बालाघाट

शोध सार :– प्रस्तुत शोध में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के अध्यापकों के शिक्षण के प्रति प्रतिबद्धता का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया हैं। शोध अध्ययन हेतु जबलपुर शहर के ग्रामीण एवं शहरी उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया। आंकड़ों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। अनुसंधान उपकरण के रूप में शिक्षण के प्रति व्यावसायिक प्रतिबद्धता मापनी डॉ. रविन्दर कौर एवं डॉ. सबरजीत कौर, संजीत कौर एवं मानसिक स्वास्थ्य मापनी, डॉ. श्रीमति कमलेश शर्मा की मापनी का प्रयोग किया गया हैं। प्राप्त जानकारी को सांख्यिकीय विधि द्वारा सत्यापन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के महिला एवं पुरूष अध्यापकों ने शिक्षण के प्रति प्रतिबद्धता का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता हैं।

प्रस्तावना :– शिक्षा मानव जीवन का आधार है, मानव का विकास एवं उन्नयन शिक्षा पर निर्भर हैं। शिक्षा व्यक्ति को इस योग्य बनाती है जिससें वह परिस्थितियों के अनुरूप अपने जीवन व समाज के लिये उचित कार्यो को उचित समय पर कर सके। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों का अत्याधिक महत्व हैं वह आज की शिक्षा प्राणली का महत्वपूर्ण अवयव एवं केन्द्र बिंदु है, जिसके कंधों पर देश को संवारने का कार्यभार हैं। यह शिक्षा का कार्यान्वयनकर्त्ता, भविष्य की पीढ़ियों को आकार देने वाला एक अन्वेशक तथा समन्वयक होता हैं। शिक्षक विद्यार्थी के गुणों को निखारकर उसे दीपक की लौ की तरह प्रकाशित भी करता हैं। विद्यालयों में अध्यापक का महत्व न केवल शिक्षा के क्षेत्र में बल्कि राष्ट्र निर्माण के क्षेत्र में भी हैं। इस दृष्टि से वह राष्ट्र का निर्माता कहा जाता हैं। हर एक देश का भविष्य शिक्षा के उच्च स्तर के विचार शिक्षक पर ही निर्भर करता हैं। शिक्षक विद्यालय संगठन का हृदय माना जाता हैं। उनका कार्य न केवल बालक का मानसिक विकास करना है, वरन् उसके शारीरिक, नैतिक सामाजिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास में भी योगदान करना हैं, शिक्षक की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए शिक्षाशास्त्री ने कहा हैं –" शिक्षक राष्ट्र की संस्कृति बनाता है। शिक्षक को देश के भावी कर्णधार व समाज का मार्गदर्शक माना गया है, वह राष्ट्र का शिरोमणि निर्माता एवं कर्णधार है।" शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक के व्यवसाय का ऐसा ही महत्व हैं जैसे कि ऑपरेशन करने के लिये किसी डॉक्टर अर्थात् सर्जन का महत्व होता है। शिक्षक सिर्फ समाज ही नहीं बल्कि राष्ट्र की भी धुरी हैं। समाज व राष्ट्र सुधार और निर्माण के कार्य में उसकी महत्ती भूमिका होती हैं, इसलिए किसी भी शिक्षा प्रणाली या शिक्षा योजना की सफलता या असफलता शिक्षा के क्षेत्र के सूत्रधार शिक्षकों के रवैये और उनके व्यवहार पर निर्भर करता हैं। अध्यापक का कर्तव्य हैं कि वह अपनी व्यावसायिक कुशलता बढ़ाने का सदैव प्रयास करे। सदैव से ही शिक्षक का पद समाज एवं शैक्षिक कार्यक्रमों में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा हैं। शिक्षा का पाठ्यक्रम, निर्देशन, कार्यक्रम छात्र आदि कितने ही अच्छे क्यों न हो परंतु जब तक उसमें एक अच्छे शिक्षक द्वारा प्रण नहीं फूके जायेगें। तब तक शैक्षिक पद्धति सुचारू रूप से संचालित नहीं हो सकती हैं।

एक अध्यापक को अपने व्यवसाय के प्रति निष्ठावान एवं कर्तव्यनिष्ठ होता हैं। अपने व्यवसाय में निपुण होने के लिये उसे मनोविज्ञान का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक हैं। क्योंकि शिक्षक मनोविज्ञान की सहायता से वह अपने छात्रों के विषय का ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

अध्यापक अपने व्यवसाय में लंबी अवधि तक अध्यापन करने की प्रकिया से गुजरता हैं। तब जाकर अध्यापक ज्ञान, प्रशिक्षण और अनुभव अर्जित करता है। वह समाज की नयी पीढ़ी को अज्ञान के अंधकार से बाहर लाकर समाज के आदर्शों और मूल्यों के अनुरूप आकृति देता है। शिक्षण एक सम्मानजनक व्यवसाय है अन्य व्यवसायों की तरह शिक्षण कार्य भी एक व्यवसाय माने जाने लगा है। इसमें विशेष प्रकार के ज्ञान व दक्षता की आवश्यकता होती हैं। इसलिए शिक्षक को नियमित रूप से अपने ज्ञान में वृद्धि तथा व्यावसायिक तथा दक्षता में वृद्धि करते रहना आवश्यक हैं। शिक्षक

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की सामाजिक सरोकार और महिला सशक्तिकरण का अध्ययन

2020

सचिन कुमार पेन्डके
डॉ. मंजू शर्मा
ज्योति विद्यापीठ वूमेन्स विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

सारांश –

आजकल महिला सशक्तिकरण एक बहुआयामी और बहु–स्तरीय अवधारणा है। महिला सशक्तिकरण का अध्ययन भी संदर्भ–विशिष्ट है। हमने जबलपुर जिले की महिलाओं के लिए घरेलू, स्तर पर और सामुदायिक स्तर पर सशक्तिकरण को प्राथमिकता दी है। इसके लिए मूल रूप से प्रत्येक स्तर के लिए महिला सशक्तिकरण के पांच आयामों पर विचार किया गया। ये आर्थिक आयाम, पारिवारिक आयाम, राजनीतिक आयाम, एक सामाजिक आयाम और कानूनी आयाम है। इस शोध में, सामाजिक सरोकारों और महिलाओं के महिला सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जो ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों (जबलपुर जिले के संदर्भ में) में उनके परिवार पर इसके प्रभाव को दर्शाता है। उन महिलाओं पर ध्यान केंद्रित करें जो भारत के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में समाज की चिंता के साथ और जबलपुर के मुख्य संदर्भ के साथ अपनी कमाई के लिए काम करती है। यह अनुभवजन्य अध्ययन जबलपुर जिले की 500 महिलाओं से एकत्रित प्राथमिक आंकड़ों के एक सेट पर आधारित है।

प्रस्तावना –

महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य महिलाओं के व्यक्तियों और समुदायों की आध्यात्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षणिक, लैंगिक या आर्थिक ताकत में वृद्धि करना है। भारत में महिला सशक्तिकरण कई अलग–अलग चर पर निर्भर है, जिसमें भौगोलिक स्थिति (शहरी / ग्रामीण) शैक्षिक स्थिति सामाजिक स्थिति (जाति और वर्ग) और उम्र शामिल है। स्वास्थ्य, शिक्षा, आर्थिक अवसर, लिंग आधारित हिंसा और राजनीतिक भागीदारी सहित कई क्षेत्रों में राष्ट्रीय, राज्य और स्थानीय (पंचायत) स्तरों पर महिला सशक्तिकरण की नीतियां मौजूद है। हालांकि, सामुदायिक स्तर पर नीतिगत प्रगति और वास्तविक अभ्यास के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है।

महिला सशक्तिकरण, साक्ष्य आधारित सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण मंच है जो महिलाओं को पैसे बचाने, वित्तीय साक्षरता विकसित करने और आय–सृजन की गतिविधियों में निवेश करने में सक्षम बनाता है। वित्तीय सेवाओं में महिलाओं की पहुंच बढ़ाने के अलावा, महिला सशक्त समूह कौशल सीखने और क्षमता निर्माण, आत्मसम्मान,

P: ISSN NO.: 2321-290X
E: ISSN NO.: 2349-980X
RNI : UPBIL/2013/55327
VOL-4* ISSUE-12* August- 2017
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

Potential of Juvenile Delinquency among Secondary School Students & Its Impact on Their Academic Achievement with Special Reference to District Jabalpur, M.P.

Sharafat Ali Khan
Research Scholar,
Deptt.of Education,
Rani Durgawati Vishwavidyalaya,
Jabalpur

Bhawana Soneji
Principal,
Dr. Radhakrishnan College of Education,
Jabalpur

Abstract

The present study was undertaken to find out the potential of juvenile delinquency among secondary school students & its impact on their academic achievement. The study was conducted on 500 male secondary school students of district Jabalpur. Lidhoo's delinquency proneness scale by Dr M. L. Lidhoo was used to collect the data & previous annual exam marks were used for assessing the academic achievement of the students. The collected data was subjected to various statistical techniques viz, Mean, S.D,'t'-test and Pearson's correlation. Survey method was used to conduct the study. The result of the study reveals that there is potential of delinquency among secondary school students and it is also found that there is great impact on the academic achievement of secondary school students having potential of delinquency.

Keywords: Juvenile Delinquency, Academic Achievement.

Introduction

The problem of juvenile delinquency is more complicated and universal and its prevention programmes are either unequipped to deal with the present realities or do not exists. Many developing countries have done little or nothing to deal with these problems, and international programmes are obviously insufficient. Developed countries are engaged in activities aimed at juvenile prevention but the overall effects of these programmes are rather weak because the mechanisms in place are often inadequate to address the existing situation.

Juvenile delinquency refers to the involvement by the teenagers in an unlawful behaviour who is usually under the age of 18 and commits an act which would be considered as crime. A child is known delinquent when he/she commits the mistake which is against the law and which is not accepted by the society. Thus juvenile delinquents mean those Childs or persons who have not completed the age of 18 years and violates the law commits an offence under the legal age of maturity. In the year 1484 William Coxton used the word delinquent who describe a person who was found guilty. Hence delinquency means anti- social behaviour or behaviour which is unsocial in nature.

No one is born delinquent, but bad environmental circumstances made him to be so. A child is born free and if nurtured with proper care, attention and brought up in a congenial environment, then he/she grows in a positive way. All round development of a child like physical, mental, moral, and spiritual development makes him capable of realizing his fullest potential and prompts him to become a sound personality. Contrary to this, harmful surroundings, poverty, illiteracy, negligence of basic needs, bad company and other abuses and mischief may turn a child to a delinquent As the previous studies also reveals that delinquency has a great impact on adjustment and academic achievement of secondary school students N.A Gash et al (2009) concluded that high and low delinquency proneness subjects differ significantly from each other on the various dimensions of achievement motivation. Ellam R. & Gallup (1993) concluded that lack of discipline in public schools is one of the biggest problems being faced along with fighting, violence, and gangs. Sood & Kumar (2007) has found

P: ISSN NO.: 2321-290X
E: ISSN NO.: 2349-980X
RNI : UPBIL/2013/55327
VOL-4* ISSUE-12* August- 2017
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

Effect of Modernity on Secondary School Students in Relation to their Socio-Economic Status with Reference to District Jabalpur M.P.

Imtiyaz Ahmad Ahangar
Research Scholar,
Deptt.of Education,
Rani Durgawati Vishwavidyalaya,
Jabalpur

Bhawana Soneji
Principal,
Dr. Radhakrishnan College of Education,
Jabalpur

Abstract

The study was undertaken to find out the effect of modernity on secondary school students in relation to their socio-economic status. The sample of the study comprises of 600 secondary school students of district Jabalpur in which 320 were boys and 280 were girl students. In the present study descriptive survey method of research was used. The data was collected by using comprehensive modernization inventory (CMI-AK) by Dr. S.P Ahluwalia & Dr A.K Kalia, and Upadhyay Sexsena socio-economic status scale (USSESS) by Sunil Kumar Upadhyay and Ulka Saxsena. The statistical techniques viz, Mean, S.D, 't'-test and Pearson's product movement correlation method were used to interpret the data. The findings of the study show that modernity has a profound effect on the socio-economic status of secondary school students.

Keywords: Modernity, Socio-Economic Status.

Introduction

From the beginning of life till now life has been changing. Change is an ever present phenomenon everywhere. Change is the law of nature. The nature is never at rest. It is changeful. Similarly, society is not at all a static phenomenon, but it is a dynamic entity. It is an ongoing process. Society is subject to constant changes. Every society & culture, no matter how traditional & conservative, is constantly undergoing change. Society changes in ceaseless flux & flow. Society is influenced by many forces & factors that irresistibly cause changes. Education has been accepted as one of the major source for change. Education has brought about phenomenal changes in every aspect of man's life.

The use of education for spreading the values of modernization came to be emphasized from the 1960's & 1970's onwards. Modernization is understood as a process which indicates the adoption of modern ways of life & values. It is a process which changed the society from primarily agricultural to industrial economy. It is an attempt on the part of peoples particularly those who are custom bond, to adopt themselves to the present time conditions, styles, & ways in general. It indicates the changes in people's preferences, ideas, and values, speaking styles etc. The process of modernization has also changed the entire system of education as a whole making use of new techniques, equipments, & new innovations to make teaching learning more effective. During the process of change in each & every field of society, socio-economic status of an individual has also changed from time to time. Modernization has played an important role in improving the socio-economic status of an individual, as the study conducted by Shashi Kala Singh (2011) finds that modernization is most importantly influenced by the educational difference of the parents. Nahida Naseem (2011) in her study concluded that male higher secondary school students differ significantly from female higher secondary school students on the total scores of modernization. She observes that female higher secondary school students have higher level of modernization than male students. Hetal, T.Patel (2013) founds that urban area adolescents have higher modernized attitude than that of rural area adolescents. He further observed that high socio economic status adolescents have modernized attitude and academic achievement than that of adolescents of middle and low socio economic status. From the above discussion it can be said that modernity has a great impact on all other aspects of life including socio economic status especially during the adolescent period of life.

IMPACT FACTOR : 5.373 ISSN 2230-8938

ANUSANDHAN VATIKA

VOLUME - III ISSUE - 3

September - 2018

(A Half Yearly Inter-Disciplinary Research journal of Human Existence)

Anusandhan Vatika

Panchola Bhawan, Naseem Gall, Barhat, Uttarkashi, Uttarakhand-249193 Uttarkashi, Uttara Khand

Impact Factor: 5.373

ISSN: 2230:8938

Certificate

This is to certify that our Editorial, Advisory and Review Board accepted research paper of Dr./ Shri./ Smt. डॉ. (श्रीमती) भावना सोनेजी, प्राचार्य (शिक्षा संकाय) डॉ. राधाकृष्णन कॉलेज ऑफ एजुकेशन करमेता, जबलपुर (म.प्र.)

The title of the paper is "विभिन्न आपराधिक प्रवृत्ति के शिक्षित एवं अशिक्षित कैदियों के 'निर्णयात्मकता' व्यक्तित्व कारक का तुलनात्मक अध्ययन" *which is original and innovative. It is done double blind peer reviewed. This article is published in Volume III, Issue 3, September, 2018.*

Date: 30th September, 2018

Mr. Suresh Chandra

ISSN: 2234-1938

''विभिन्न आपराधिक प्रवृत्ति के शिक्षित एवं अशिक्षित कैदियों के 'निर्णयात्मकता' व्यक्तित्व कारक का तुलनात्मक अध्ययन''

श्रीमती ज्योति सिंह
शोधकर्ता

डॉ. (श्रीमती) भावना सोनेजी
प्राचार्य (शिक्षा संकाय) डॉ.राधाकृष्णन कॉलेज ऑफ एजुकेशन कटंगा, जबलपुर (म.प्र.)

संक्षेपिका :–

प्रस्तुत शोधपत्र विभिन्न आपराधिक प्रवृत्ति के शिक्षित एवं अशिक्षित कैदियों के निर्णयात्मकता व्यक्तित्व कारक का तुलनात्मक अध्ययन से संबंधित है। विभिन्न स्तर के शिक्षित एवं अशिक्षित कैदियों के व्यक्तित्व मापन हेतु डॉ. अरुण कुमार सिंह एवं अशीष कुमार सिंह द्वारा निर्मित व्यक्तित्व विभेदक मापनी का उपयोग किया गया। साथ ही सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया। केन्द्रीय जेल जबलपुर एवं केन्द्रीय जेल रीवा से शिक्षित एवं अशिक्षित कैदियों के तीन–तीन स्तरों के लिए 20–20 कैदियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया जिनकी कुल संख्या 120 है। सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा एफ अनुपात का उपयोग किया गया। परिणाम में शिक्षा का स्तर एवं आपराधिक प्रवृत्ति की प्रकृति से निर्णयात्मकता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

भूमिका :–

वर्तमान समय में हमारा समाज कुछ खास प्रवृत्तियों से ग्रसित हो गया है। समस्याएँ प्रतिदिन प्रत्येक वर्ग के युवा पीढ़ी को तीव्र गति से अपने आगोश में जकड़ती जा रही हैं, यही वजह है कि लोग अपने भविष्य को लेकर चिंतित दिखाई दे रहे हैं। वैसे तो समाज कई प्रकार की समस्याओं का सामना लगातार करता रहा है, लेकिन यहाँ शोधकर्ता के द्वारा युवा वर्ग में बढ़ती हुई आपराधिक प्रवृत्ति पर ध्यान आकृष्ट किया गया है।

आपराधिक प्रवृत्ति का असामाजिक व्यवहार से गहरा संबंध है। जब से व्यक्ति समाज बनाकर रहना प्रारंभ किया अर्थात् सभ्यता का विकास हुआ तब समूह में यदि देखा जाय तो यह स्पष्ट हो जाता है कि सामाजिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए विभिन्न प्रकार के सामाजिक नियम बनाये गये थे ताकि प्रत्येक व्यक्ति उसी के अनुसार कार्य करे जिससे सामाजिक व्यवस्था में किसी प्रकार की बाधा नहीं आ सके। आज भी यही व्यवस्था समाज द्वारा चलायमान है जिसे रीति–रिवाज, परम्पराएँ संस्कृति आदि नाम से संबोधित किया जाता है। इसके अतिरिक्त चूंकि हमारे देश में प्रजातांत्रिक व्यवस्था है, जिसके अंतर्गत सभी को समान अधिकार और कर्तव्य मिले हैं। यदि किसी भी व्यक्ति के द्वारा दूसरे व्यक्ति के अधिकार और कर्तव्य में हस्तक्षेप किया जाता है तो उसके लिए पुलिस और न्यायालय की व्यवस्था सरकार के द्वारा की गई है।

आपराधिक प्रवृत्ति के कई कारण हैं, जिसमें कुछ हद तक वंशानुक्रम और फिर वातावरण का विशेष प्रभाव पाया जाता है। यद्यपि आपराधिक प्रवृत्ति के कारण कुछ भी हों लेकिन इसका प्रभाव समाज पर बुरा ही पड़ता है। आज समाज में प्रत्येक वर्ग के परिवार प्रतिदिन दहशत में जी रहे हैं कि अगर हमारा बच्चा कहीं ऐसी राह को न चुन ले। प्रतिदिन समाचार पत्र में ऐसे समाचार पढ़ने को मिलते हैं कि संगति के कारण किसी प्रतिष्ठित परिवार का बच्चा अपराध में संलिप्त पाया जाता है। कई बार बच्चे भौतिकवादी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपराध के दलदल में फँस जाते हैं। दूसरी ओर कुछ बच्चे आवश्यक आवश्यकताओं के लिए ऐसा कदम उठाते हैं। जिन परिस्थितियों में भी इस वृत्ति को अपनाया जाता है उसका मुख्य कारण संभवतः नैतिक मूल्य में आ रही गिरावट हो सकती है जिसके फलस्वरूप मनुष्य संवेदनहीनता हावी रहा है।

सिन्हा एस. (2016) के शोध परिणामों से ज्ञात होता है कि सामान्य की तुलना में अपराधियों में बुद्धि आवेगशील, शंकालु, स्वयं में पूर्ण, त्वरित काम करना, आत्म–प्रदाय को नियंत्रित करने वाले कारक में उच्च प्राप्तांक है। इसके विपरीत सामान्य की तुलना में इनमें संवेगात्मक रूप से स्थिरता में अत्यंत न्यून स्कोर है। अतः अपराधियों एवं सामान्य व्यक्तियों जो अपराधी नहीं हैं में व्यक्तित्व शीलगुणों में भिन्नता होती है। **स्टेनर हेन्स, कॉफमैन एलिजाबेथ एवं डक्सबरी इलेन (1999)** के अध्ययन से जो प्रमुख निष्कर्ष निकले उनसे ज्ञात होता है कि कठिनाई के स्वयं बताये गये स्तर एवं तनाव तथा पूर्व के आपराधिक व्यवहार के साथ–साथ सजा की अवधि में व्यवहार के मध्य सार्थक सहसंबंध था। **कौशर एरिया, नदीम मसूद, रसीद मिसबाह, आमीन फोजिया, फाद समर, उसमान मोहम्मद, खुरम फातिमा, सलीम सादिया (2012)** के अध्ययन से जो प्रमुख निष्कर्ष निकले उससे स्पष्ट होता है कि बाल अपराधियों में मनोविकृतियाँ होती हैं, संभवतः वे उसके कारण बाल आपराधिक प्रवृत्ति के हो जाते हैं। **अग्रवाल अतुल, वैष्य सुप्रिया, शर्मा डी.के., सुशील सी. एस, उसमान नराहत एवं सुदर्शन एस. (2015)** के अध्ययन से जो प्रमुख निष्कर्ष निकले उससे स्पष्ट होता है कि कैदियों में सकारात्मक गुणों की कमी है। जिस कारण वे आपराधिक प्रवृत्तियों में संलग्न हो जाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति का अपना एक व्यक्तित्व होता है। मनोवैज्ञानिकों के द्वारा भी यह बात कही गई है कि किसी भी व्यक्ति के पास जो कुछ भी है वही उसका व्यक्तित्व है। ऑलपोर्ट महोदय ने व्यक्तित्व के बारे में कहा है कि "व्यक्तित्व व्यक्ति में उन मनोदैहिक व्यवस्थाओं का संगठन है, जो कि वातावरण के साथ अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता है।" विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व को भिन्न–भिन्न प्रकार से परिभाषित किया है जिसमें ऑलपोर्ट महोदय द्वारा दी गई परिभाषा वर्तमान में सर्वमान्य है। अर्थात् व्यक्तित्व के अंदर बहुत सारे गुण विद्यमान रहते हैं, जो व्यक्ति को समाज में समायोजित कर पाता है तथा समाज की आवश्यकता के अनुसार अपनी भूमिका को साबित कर पाता है।

PJI
2320-351X

ISSN [illegible] IMPACT FACTOR 2.836

PATLIPUTRA

Patliputra Journal of Indology

VOLUME - [illegible] ISSUE - 3 September [illegible]

Patliputra Centre for Indological Research, Patna, Bihar [illegible]

PJI 2320-351X

PATLIPUTRA

Patliputra Journal of Indological

Patliputra centre for indological research. Patna, Bihar (UP)

ISSN: 2320-351x IMPACT FACTOR 2.836

Certificate

This is to certify that our Editorial, Advisory and Review Board accepted research paper of Dr./ Shri./Smt. डॉ. (श्रीमती) भावना सोनेजी, प्राचार्य (शिक्षा संकाय) डॉ.राधाकृश्णन कॉलेज ऑफ एजुकेशन करमेता, जबलपुर (म.प्र.).

The title of the paper is "विभिन्न आपराधिक प्रवृत्ति के शिक्षित एवं अशिक्षित कैदियों के वैयक्तिक मूल्य 'सामाजिक मूल्य' संबंधी तुलनात्मक अध्ययन" *which is original and innovative. It is done double blind peer reviewed. This article is published in Volume III, Issue 3, September, 2018.*

Dr. Daya Shankar Tiwari

Editor Chief

PJI Patliputra Journal of Indology
Patliputra Journal of Indology ISSN: 2320-351x

''विभिन्न आपराधिक प्रवृत्ति के शिक्षित एवं अशिक्षित कैदियों के वैयक्तिक मूल्य 'सामाजिक मूल्य' संबंधी तुलनात्मक अध्ययन''

श्रीमती ज्योति सिंह
शोधकर्ता

डॉ. (श्रीमती) भावना सोनेजी
प्राचार्य (शिक्षा संकाय) डॉ.राधाकृष्णन कॉलेज ऑफ एजुकेशन करमेता, जबलपुर (म.प्र.)

सारांश :–

प्रस्तुत 'शोधपत्र विभिन्न आपराधिक प्रवृत्ति के शिक्षित एवं अशिक्षित कैदियों के वैयक्तिक मूल्य 'सामाजिक मूल्य' संबंधी तुलनात्मक अध्ययन से संबंधित है। विभिन्न स्तर के शिक्षित एवं अशिक्षित कैदियों के वैयक्तिक मूल्य मापन हेतु डॉ. (श्रीमती) जी.पी. शैरी एवं प्रो. आर.पी.वर्मा द्वारा बनाई गई वैयक्तिक मूल्य प्र''नावली का उपयोग किया गया। साथ ही सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया। केन्द्रीय जेल जबलपुर एवं केन्द्रीय जेल रीवा से शिक्षित एवं अशिक्षित कैदियों के तीन–तीन स्तरों के लिए 20–20 कैदियों को न्यादर्श के रूप मे लिया गया, जिनकी कुल संख्या 120 है। सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा 'एफ' अनुपात का उपयोग किया गया। परिणाम में शिक्षा के स्तर एवं आपराधिक प्रवृत्ति की प्रकृति से सामाजिक मूल्य पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

प्रस्तावना :–

हमारा समाज विविधताओं से भरा हुआ है। जहाँ विभिन्न जाति, धर्म, वर्ग इत्यादि के लोग पाये जाते हैं। यह विविधता सभ्यता के विकास के समय से चली आ रही है। प्रत्येक वर्ग के व्यक्तियों में भिन्न–भिन्न प्रकार के गुण–दोश, आकार, प्रकार, रूचि, अभिवृत्ति, इत्यादि पाया जाता है। वर्तमान युग में व्यक्तिगत विभिन्नता से इनकार नहीं किया जा सकता ; यथा– एक माता–पिता से जन्में दो जुड़वा भाई–बहन भी एक से नहीं होते ऐसी स्थिति में सभी का एक समान होना संभव नहीं। एक ऐसी वृत्ति जिससे समाज सालों (वर्षों) से पीड़ित है, लेकिन उसका समाधान नहीं हो पा रहा वह है आपराधिक प्रवृत्ति। आपराधिक प्रवृत्ति से आशय यह है कि अपराध करने की प्रवृत्ति। यह प्रवृत्ति असामाजिक कार्यों से ही संबंधित है, जो व्यक्ति इसके आगोश में चला जाता है तो कहीं–न–कहीं समाज को क्षति अवश्य पहुँचाता है जिससे सामाजिक व्यवस्था मे व्यवधान उत्पन्न हो जाती है। अपराध के अन्तर्गत चोरी–डकैती, लूट, हत्या,बलात्कार, गाली–गलौज इत्यादि कार्य आते हैं।

किसी भी व्यक्ति में पाये जाने वाला आपराधिक प्रवृत्ति के कई कारण हैं जिनमें वंशानुक्रम और वातावरण दोनों की ही भूमिका रहती है लेकिन वातावरण इसे अधिक प्रभावित करता है। जिस प्रकार के वातावरण में बालक रहता है उसी के अनुसार वह व्यवहार करना सीख लेता है।

आपराधिक प्रवृत्ति के साथ–साथ समाज मे दूसरी बड़ी समस्या मूल्यों मे अबाध गति से आ रही गिरावट है। मूल्यहीन जीवन व्यक्ति को उच्छश्रृंखल बना देता है। मूल्य को परिभाशित करते हुए क्लूकहोन ने कहा है, ''मूल्य उचित व्यवहार के विचार होते हैं जो चुने हुए व्यवहार से संबंधित होते हैं।'' मूल्यवान जीवन व्यक्ति को नियमों के अंतर्गत बाँधता है जिससे व्यक्ति का जीवन व्यवस्थित और अनुशासित हो जाता है। मूल्य का विकास भी कई कारणों से प्रभावित होता है जिसमें वातावरण का प्रभाव अधिक पाया जाता है। सभी लोगों मे यह विश्वास व्याप्त है कि बालक की संगति जैसी होगी उसका व्यवहार आगे चलकर उसी के अनुरूप विकसित होगा। वैयक्तिक मूल्य माता–पिता, परिवार, संबंधियों, पड़ोसियों, दोस्तों आदि के द्वारा ही सीखी जाती है। आजकल माता–पिता समय के अभाव के कारण बच्चों से अंतःक्रिया बहुत कम कर पाते हैं जिसके कारण बच्चों को संगति का ज्ञान उन्हें नहीं हो पाता तथा अपरिपक्व होने के कारण बच्चा सही–गलत का निर्णय नहीं कर पाता और भौतिकवादी जिंदगी जीने की लालसा में ऐसे कार्यों को स्वीकार कर लेता है जो अपराध की दुनियाँ में उन्हें ले जाता है।

वर्तमान शोध से संबंधित पूर्व शोध निम्न है :–

पोश्दरो हेनरी (2012) के शोध परिणाम व्यवहार पर वातावरण के प्रभाव को प्रदर्शित कर रहा है। प्रस्तुत शोधकार्य मे समान वातावरण में रहने के कारण शिक्षित एवं अशिक्षित अपराधियों के व्यक्तिगत मूल्यों मे अन्तर न आना स्वाभाविक ही प्रतीत होती है।

सिंह, उदय प्रताप, सिंह लालबहादुर, सिन्हा बालानन्द एवं कुमारी रेन (1985) के शोध परिणामों से जो प्रमुख निष्कर्ष निकले उससे स्पष्ट होता है कि अपराधी एवं गैर अपराधियों के व्यक्तित्व आयामों–बर्हिमुखता एवं मनस्ताप तथा अपराधिक प्रवृत्ति में अंतर होता है।

साहनी एस. पी. (1984) के शोध परिणामों से जो प्रमुख निष्कर्ष निकले उससे ज्ञात होता है कि–(1) अन्तर्मुखता बर्हिमुखता, सामाजिक कुसमायोजन, स्वायत्तता / स्वशासन / स्वतंत्रता एवं नकारात्मक प्रवृत्तियों में किशोर अपराधियों मे बहुत महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया। (2) गैर अपराधी बालकों की तुलना मे किशोर अपराधी बालकों मे मूल्य निम्न पाये गये। उदारचित्तता, योग्यता, दक्षता, सफाई, क्षमा''शीलता, ईमानदारी, आज्ञाकारिता, जिम्मेदारी तथा 'स्व –नियंत्रित' जैसे–मूल्य प्रत्ययों मे कमी पाई गई।

समाज एवं व्यक्ति का अन्योन्याश्रित संबंध है। बिना समाज के व्यक्ति की कल्पना नहीं की जा सकती और बिना व्यक्ति के समाज की। अर्थात् दोनों ही महत्वपूर्ण हैं, लेकिन यदि एक व्यक्ति और संपूर्ण समाज के परिप्रेक्ष्य में देखा जाय तो एक व्यक्ति के हित के लिए संपूर्ण समाज की उपेक्षा उचित नहीं है। यहाँ समाज में लोगों को आपराधिक प्रवृत्ति के कुछ व्यक्ति के कारण कई

Emerging Research Journal
ISSN No. : 2456-2424: December 2018

मॉयल श्रमिकों के सामाजिक-आर्थिक स्तर का उनके बच्चों के सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन

*श्रीमती बेलामैरी जोसफ**
*श्रीमती भावना सोनेजी***

शोध सार

प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य मॉयल श्रमिकों के सामाजिक-आर्थिक स्तर का उनके बच्चों के सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन करना। अध्ययन में मॉयल (मैंगनीज ओर इण्डिया लिमिटेड) बालाघाट जिले के (200 छात्र 200 छात्राओं) को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। अध्ययन में सामाजिक-आर्थिक मापनी- श्री एल.एन. दुबे एवं श्री प्रो. भूपेन्द्र निगम एवं सृजनात्मकता मापनी बाकिर मेंहदी का उपयोग किया गया। आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण के लिए क्रांतिक अनुपात का उपयोग किया गया। शोध परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक-आर्थिक स्तर का सृजनात्मकता के कारक धारा प्रभावशीलता, लचीलापन, मौलिकता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्तर का प्रभाव बालक के सामाजिक विकास पर कई रूपों में पड़ता है, जैसे उनके रहन-सहन, शिक्षा, खेलकूद, आस-पड़ोस, खान-पान तथा विभिन्न प्रकार की गतिविधियों पर पड़ता है। उनके सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर समाज को मुख्य तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है, जैसे- उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग, निम्न वर्ग। उच्च वर्ग के परिवारों का सामाजिक स्तर उच्च स्तर का होता है जिससे वे अपने बच्चों का पालन-पोषण अच्छे रीति से करते एवं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। शिक्षा का स्तर भी उच्च रहता है इसलिए उनका समायोजन एवं सृजनात्मकता भी उच्च स्तर की होने की संभावना रहती है। उनके परिवारों में शिक्षा, मनोरंजन के पर्याप्त अवसर मिलते हैं जिनके कारण उनमें सृजनात्मकता का विकास अच्छा होता है किन्तु निम्न सामाजिक-आर्थिक के परिवारों में यह स्तर कम दिखाई देता है। निर्धन परिवारों में बच्चों को पौष्टिक भोजन, शिक्षा एवं मनोरंजन के उत्तम साधन नहीं मिल पाते हैं, अतः उनका व्यक्तित्व संकुचित होकर रह जाता है, उनमें हीनता की भावना उत्पन्न हो जाती है, वे किसी नये कार्यों को करने का साहस नहीं कर पाते हैं, जिससे उनमें सृजनात्मकता के विकास की संभावना भी कम होती है। प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में सामाजिक-आर्थिक स्तर का मुख्य स्थान होता है। अनेक अध्ययनों द्वारा मनोवैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया है- गोपाल, टी. वेनू राय तथा डॉ. सत्यपाल (2011) ने अपने शोध के परिणामों से यह स्पष्ट किया है कि यदि माता-पिता का उच्च स्तर के व्यवसाय एवं शिक्षा से संबंध है तो ऐसी स्थिति में उनके बालक-बालिकाओं की सृजनात्मकता भी उच्च श्रेणी की होती है। उसी प्रकार अमीर फॉरोगी एवं अन्य साथियों (2013) ने अपने शोध में उभरते किशोरों की सामाजिक-आर्थिक स्तर का रचनात्मकता पर सकारात्मक सह-संबंध बताया। अतः आवश्यक हो जाता है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सामाजिक-आर्थिक स्तर का उनके बच्चों पर सृजनात्मकता के प्रभाव का अध्ययन किया जाये।

उद्देश्य :- श्रमिकों के सामाजिक-आर्थिक स्तर का उनके बच्चों की सृजनात्मकता के कारक धारा प्रवाहशीलता, लचीलापन एवं मौलिकता पर प्रभाव का अध्ययन।

*सहायक प्राध्यापक, बालाघाट स्नातक कॉलेज, बालाघाट
**प्राचार्य, राधाकृष्णन कॉलेज करमेता, जबलपुर (म.प्र.)

P: ISSN NO.: 2321-290X
E: ISSN NO.: 2349-980X
RNI : UPBIL/2013/55327
VOL-6* ISSUE-2* October- 2018
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

प्राथमिक स्तर की शालाओं में सेवारत शिक्षिकाओं के आकाँक्षा स्तर पर वैवाहिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन

काशी नरेश सिंह
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय
जबलपुर, म.प्र.

भावना सोनेजी
प्राचार्या,
डॉ. राधाकृष्णनन् कॉलेज ऑफ
एजुकेशन,
जबलपुर, म.प्र.

सारांश

प्राथमिक स्तर की शालाओं में विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं के आकांक्षा स्तर के लिए यह आवश्यक है कि उनकी व्यवसायिक दृष्टिकोण, काम करने की स्थिति के प्रति दृष्टिकोण, व्यवसायिक अभिवृत्ति, संस्था के प्रति दृष्टिकोण के अन्तर का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है प्रस्तुत शोधार्थी द्वारा जबलपुर जिले के प्राथमिक स्तर की सेवारत विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं के आकांक्षा स्तर पर वैवाहिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द : प्राथमिक स्तर की शालाओं, विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाएं।

प्रस्तावना

'मातृमान पितृमान आचार्यवान पुरुषो वेद'

प्राचीन काल से ही गुरु का परिवार और समाज में सबसे ऊँचा स्थान रहा है। वैदिक काल से लेकर रामकृष्ण–परमहंस तक ऐसे अनेक शिक्षकों के नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने अपने छात्रों का भविष्य निर्माण करने में सम्पूर्ण जीवन उत्सर्ग कर दिया।

"गुरुर्ब्रम्हा गुरुर्विष्णु गुरु देवोमहेश्वरः।
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।"

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में कहा है –

मातृ देवो भव पितृ देवो भव आचार्य देवो भव'

सुप्रसिद्ध कवि कबीर दास जी के अनुसार–

"गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागें पाय।
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय।।"

मनु–स्मृति– शिक्षा पद्धति में सावित्री को माता एवं आचार्य को पिता कहा गया है।

"तत्राऽस्य माता सावित्री पिता त्वाचार्य उच्यते।
(मनुस्मृति 2.170)

कठोपनिषद में ज्ञान प्राप्त करने के लिए अध्यापक का होना अनिवार्य बताया गया है।

नरेणावरेण प्रोक्त एषः सुविज्ञेयो बहुधा चिन्त्यमान।
(कठोपनिषद 2.8)

"मुण्डकोपनिषद्" का कथन है विद्यार्थी को चाहिए कि वह ज्ञान को प्राप्त करने के लिये स्मृति(वेद) को जानने वाले ब्रह्मनिष्ठ गुरु के पास समित्पाणि होकर जावें– तद्विज्ञानार्थ स गुरुमेवाभिगच्छेत् समित्पाणि श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ।

ज्ञान की तुलना सूर्य से की गयी है जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश के बिना सम्पूर्ण संसार अंधकारमय है उसी प्रकार ज्ञान की ज्योति के बिना मनुष्य का जीवन भी अन्धकारमय है। यो तो अपने जीवन के प्रथम क्षण से ही मनुष्य को ज्ञान की प्राप्ति की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है किन्तु वह ज्ञान केवल अस्तित्व रक्षा में सहायक होता। जीवन को समृद्ध और प्रगतिगामी बनाने के लिए विशेष ज्ञान की आवश्यकता होती है।

बौद्ध काल में यही शिक्षा व्यवस्था मठों एवं विहारों में परिवर्तित हुई पर गुरु का स्थान वही बना रहा। प्रसिद्ध चीनी यात्री व्हेनसांग ने लिखा है कि नालंदा आदि विहारों में अत्यन्त उद्भट्ट आचार्य रहते थे। जो शिष्यों के समक्ष जीवित अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करते थे। मध्यकाल में आकर जब इस्लामी युग आया तब गुरु भक्ति का आदर्श इतना उच्च नहीं रहा जितना प्राचीन काल में था।

यदि लोकतन्त्र को जीवित रखना और सफल बनाना है तो प्रत्येक व्यक्ति को एक आधारभूत शिक्षा दी जानी चाहिये। इससे वह अपने सामाजिक

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
RNI No.UPBIL/2016/67980
VOL-4* ISSUE-2* May- 2019
Remarking An Analisation

प्राथमिक स्तर की शालाओं में सेवारत् शिक्षिकाओं की कार्यसन्तुष्टि पर वैवाहिकि स्थिति के प्रभाव का अध्ययन

काशी नरेश सिंह
शोधार्थी,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर म.प्र., भारत

भावना सोनेजी
प्राचार्या,
डॉ.राधाकृष्णनन् कॉलेज ऑफ ऐजूकेशन,
जबलपुर, म.प्र., भारत

सारांश

प्राथमिक स्तर पर विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं के कार्य एवं सम्बन्धों के प्रति अभिवृत्तियों के सम्मिश्रण का अध्ययन करने के लिए यह आवश्यक है कि उत्तम वेतन, समस्याओं का निवारण, भविष्यनिधि, पेन्शन, स्थायी नियुक्ति, कार्य की दशा, उन्नति के अवसर आदि महत्वपूर्ण एवं विशेष है। अध्ययन में प्रमोद कुमार एवं डी.एन. मुथा की शाब्दिक प्रश्नावली का प्रयोग करके विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं की कार्य के प्रति उनके व्यावसायिक दृष्टिकोण, काम करने की स्थिति के प्रति दृष्टिकोण, व्यावसायिक अभिवृत्ति एवं संस्था के प्रति दृष्टिकोण के प्रभाव का अध्ययन किया गया और पाया गया कि कार्य संतुष्टि वैवाहिक स्थिति से स्वतंत्र है। विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं की कुल कार्य सन्तुष्टि लगभग समान है। इसलिए प्राथमिक स्तर की विवाहित एवं अविवाहित दोनों प्रकार की शिक्षिकाएं विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखकर अपना अध्यापन कार्य कर रही है।

मुख्य शब्द: प्राथमिक स्तर की विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाएं एवं कार्यसन्तुष्टि।

प्रस्तावना

विद्या ददाति विनयम् विनयात् याति पात्रताम्।
पात्रतात् धनं आप्नोति, धनात् धर्मः ततः सुखम्।।

शिक्षार्थी को बिना ध्येय निर्धारित किये अपने जीवन में यथेष्ट सफलता नहीं मिल पाती है। यदि शिक्षार्थी को यही ज्ञात होगा कि उसे क्या करना है, तो किस प्रकार अपने जीवन को सफल बनाने में सफल हो सकेगा। इस प्रश्न का उत्तर उसे प्राथमिक स्तर की परीक्षा के साथ ही मस्तिष्क में आ जाना चाहिए। जब शिक्षार्थी अपना ध्येय निश्चित कर लेता है तो उसके सामने साध्य वस्तु हर समय विद्यमान रहती है और साधनों को सफल करने में सरलता रहती है माना किसी विद्यार्थी का लक्ष्य शिक्षक बनना है तो वह हाई स्कूल में प्राप्त करने में ऐच्छिक विषय का चुनाव करेगा। विद्या एवं विवेक का सहारा लेकर अपना पक्ष सुदृढ़ बनाने का प्रयास करेगा, शिक्षक बनने के लिए बी.ए./बी.एस.सी./बी. कॉम., बी.एड. तथा एम.एड.की शिक्षा प्राप्त करता है।

आचार्य देवो भवः

माता–पिता बालक को भौतिक शरीर को जन्म देते है किन्तु उसे बौद्धिक दृष्टि से विकसित करने ,जीवन की कला सिखाने का श्रेय आचार्य (गुरू) को है।

गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरूदेवोमहेश्वरः।
गुरू साक्षात् परब्रह्म् तस्मै श्री गुरुये नमः।।

हमारे भारतीय साहित्य में स्थान–स्थान आचार्य (गुरू) गान किया है शतपथ ब्राह्मण में एक स्थान कहा गया है –

मातृमान पितृमान् चार्यवान पुरूषों वेद''

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में कहा है ।

मातृ देवो भवः, पितृ देवो भवः, आचार्य देवों भवः

अर्थात् बालक के लिए माता–पिता एवं आचार्य तीनों ही देवता होते है यही नहीं हिन्दी साहित्य की प्रसिद्ध कवि कबीर दास ने कहा है

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागू पाँव।
बलिहारी गुरू आपने गोविन्द दियो बताये।।

बौद्ध काल में यही शिक्षा व्यवस्था मठों एवं व्यवहारों में परिवर्तित हुई पर गुरू का स्थान वही बना रहा। प्रसिद्ध चीनी यात्री व्हेनसाग ने लिखा है कि

Juni Khyat
(UGC Care Group I Listed Journal)

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 5 May 2020

Theories and models related to student satisfaction

Shivani Shukla
Research Scholar,
Rani Durgavati Vishwavidyalaya,
Jabalpur, (M.P.)
shivanianantjyoti@gmail.com

Dr. Bhawana Sonoji
Principal,
Dr. Radhakrishnan College of
Education, Jabalpur (M.P.)

Abstract

The goal of this review research was to examine the theories and models related to students' satisfaction with a view to bring together the knowledge related to it. Though lots of literature is available related to students' satisfaction, especially in the context of western world, a synthesized information base was missing. For this, extensive literature was reviewed from journals across the globe and summarized, and related information has been collected and presented in simplified manner. Clearly, the paper will serve to be knowledge base for many who would wish to develop clarity about the topic.

As the article will elaborate upon, service quality model, despite being widely criticized for its association with education field has been the most applied model related to research on students satisfaction. Overall, the article assumes significance because it not only presents useful insight related to students' satisfaction related literature but also uses simple structures and language to ensure it is comprehendible and clear.

Key Words: Students' satisfaction, theories, models, service quality.

 Copyright © 2020 Authors

ISSN NO : 2347-3150

Demographic factors impacting engineering students' satisfaction

Shivani Shukla
Research
Scholar,
Rani Durgavati
Vishwavidyalaya, Jabalpur,
(M.P.)

Dr.Bhawana Soneji
Principal,
Dr. Radhakrishnan
College of Education,
Jabalpur (M.P.)

Abstract

Considering the dearth of studies in Indian context related to student satisfaction, especially in engineering colleges, a study was undertaken to understand the possible differences in students' satisfaction with regard to various demographic factors.

For this, primary data was collected from 533 respondents in various engineering colleges in Mahakaushal region in Madhya Pradesh. The responses were coded and then analyzed using SPSS.

Four hypotheses were tested to understand the possible differences in student satisfaction with regard to gender, household size, income group, and parental education. Importantly, the findings reveal that apart from gender, the other three demographic variables, namely, household size, income group, and parental education did show significant difference with regard to students' satisfaction.

The study creates pathway for future endeavors wherein the causes behind these differences could be studied in greater detail.

Key Words: Students' satisfaction, theories, models, service quality.